छुटकारे का इतिहास – भाग 4

अध्याय 24: मछली का खाना एवं जुलाई की चौथी तारीख

डॉ. डेविड प्लॉट

यदि आपके पास बाइबल है, और आषा करता हूँ कि आपके पास है, तो मेरे साथ योना 1 निकालें। मैं नही मानता कि आज जुलाई की चौथी तारीख को इस पुस्तक पर आना कोई इत्तफाक है। और मैं आज के दिन बहुत ही सावधान रहना चाहता हूँ जबकि हम अमेरिकी होने के नाते स्वतंत्रता, दूसरे राष्ट्रों से स्वतंत्रता को मना रहे एवं इस पुस्तक, योना के बारे में पढ़ रहे हैं। वास्तव में, मैं चाहता हूँ कि आप इस सच को भी समझें कि हम, इस्राएल, इस्राएल के लोग, इस्राएल राष्ट्र, पुराने नियम में परमेष्वर के लोगों के साथ अमेरीका की बराबरी नही कर सकते। उनमें प्रमुख अंतर हैं।

साथ ही साथ, इस सुबह मैं सोचता हूँ कि हम जो योना की पुस्तक में देखते हैं और हमारे दिल में देखते हैं, उनमें कई सारी समानताएँ हैं। अतः मैं शुरूआत में ही आपसे यह प्रष्न पूछना चाहता हूँ। हमारा आज का सवाल, '' क्या यह संभव है कि हमारे राष्ट्र का घमंड हमें सभी राष्ट्रों के प्रति परमेष्वर के उद्देष्य का हिस्सा बनने से रोक दे।'' क्या यह संभव है कि हमारे राष्ट्र का घमंड हमें सभी राष्ट्रों के प्रति परमेष्वर के उद्देष्य का हिस्सा बनने से रोक दे?

मैने पहले भी यह कहानी बताई है परंतु इस सुबह भी उसे दुबारा बताना सही है क्योंकि वह इस बात को स्पष्ट कर सकती है। ब्रूक हिल्स की एक कलीसिया में जाने से पहले मैने इस कहानी को बताया है। मैं रविवार की सुबह सभी राष्ट्र के लोगों को चेले बनाने के बारे में प्रचार करने जा रहा था। हेदर और मैं, पासवान, उनकी पत्नी, दो डीकनों एवं उनकी पत्नियों के साथ बैठे थे। हम उन्हे उन अवसरों के बारे में बता रहे थे जब हमें, मुझे उन कलीसियाओं में जाने का मौका मिला जहाँ जाना इतना आसान नही था, ऐसे देष, कठिन देष जहाँ लोग मसीहियत, सुसमाचार का विरोध करते हैं।

और जब हम इसके बारे में बात कर रहे थे तो कुर्सी पर बैठे एक डीकन ने कहा, ''डेव, अच्छा है कि आप इन सारी जगहों पर जाते हैं, परंतु मैं तो चाहता कि परमेष्वर उन सब लोगों का विनाष करे और नरक में भेज दे।'' मुझे पता है कि प्रचारकों में बढ़ चढ़ा कर कहने की आदत होती है और उसने भी ऐसे ही कहा। ''परमेष्वर उन सब लोगों का विनाष करे और नरक में भेज दे।'' और पता है मैने क्या उत्तर दिया? मैं कुछ नही कह सका, मैं चकित रह गया। मुझे नही पता था कि क्या कहूँ।

और बातचीत इस प्रकार समाप्त हुई जैसे कि वहाँ कुछ भी नही हुआ था। और मैने सोचा, ''ठीक है, मैं कल सभी राष्ट्रों को चेला बनाने के बारे में प्रचार करूँगा और यह मजेदार होगा।'' अतः मैं रविवार सुबह वहाँ पहुँचा और आगे की कतार में बैठा था। मेरे प्रचार करने से पहले, पासवान खड़े होकर सबको स्वागत दे रहे थे और पता नही, अचानक क्या हुआ, यह जुलाई चार नही थी, परंतु उसमें कुछ देषभक्ति जाग उठी और वह कहने लगा कि किसी भी हालत में वह इस देष को छोड़कर और कहीं नही रह सकता है। उसने कहा कि उसे अमेरीकी होने का गर्व था और अन्य किसी देष की बजाय इस देष में रहने के लिए वह कितना धन्यवादी है। पूरे कमरे में 'आमेन' बार बार कहा जा रहा था और मैने सोचा, ''ठीक है, मैं सभी देषों में जाकर प्रचार करने के बारे में बताने जा रहा हूँ।'' और मैंने मसीह के अनुग्रह के साथ प्रार्थनापूर्वक प्रचार किया।

अंत में, मैं जब सामने खड़ा था। और पासवान ने खड़े होकर कहा, ''जाने से पहले मैं कुछ कहना चाहता हूँ'' उसने कहा, ''डेविड, हम आपको बताना चाहते हैं कि हम उन सभी जगहों के प्रति बहुत आभारी हैं जहाँ आप जाते हैं। और हम आपसे वायदा करते हैं कि वहाँ जाने के लिए हम आपको पैसा भी देंगे ताकि हमें वहाँ नही जाना पड़े।'' उसके वही शब्द। हेदर ने आपना हाथ मेरे कंधे पर रखा, वह मेरे पास खड़ी थी। मुझे नही पता, उसने मेरा कंधा क्यों पकड़ा था, शायद यह सोचकर कि मैं किसी के साथ बहस ना करूँ या कुछ और। मुझे नही पता।

वह जारी रखता है, ''लेकिन मेरी पिछली कलीसिया में एक जापानी मिषनरी था जिसने आकर कहा। और मैने अपनी कलीसिया से कहा कि यदि उन्होने जापान में मिषनरी को सहयोग नही दिया तो मैं प्रार्थना करूँगा कि परमेष्वर उनके बच्चों को जापान में उसके साथ कार्य करने के लिए भेजेगा। यह एक धमकी की तरह था। और उसने कहा, ''मेरी कलीसिया ने उसे लैपटोप एवं अन्य वस्तुएँ दीं।'' धमकी ने कार्य किया। उस रविवार के बाद मुझे कार मिली और हम चले गए। मिश्रित भावनाएँ, क्रोध, दुख एवं संदेह मुझमें भर गया। जो बात उस डीकन और पासवान ने कही थी, अधिकतर मसीही उस पर विष्वास करते हैं परंतु खुले रूप से कहते नही हैं। और आपको लगेगा ''कि वे कठोर हैं।''

परंतु मेरे साथ सोचें। क्या हमने कभी भी परमेष्वर की महिमा के लिए दूसरे राष्ट्र में रहने की संभावना के बारे में सोचा है। हममें से कितने मसीहियों ने वास्तव में उपवास एवं प्रार्थना के साथ प्रभु से कहा है, ''क्या आप चाहते हैं कि मैं अपने परिवार के साथ किसी दूसरे राष्ट्र में रहूँ?'' या फिर यह कहते हैं कि हम अपने

चेक काटकर पैसे भेजने को तैयार हैं ताकि हमें वहाँ न जाना पड़े। हममें से कितने माता पिता इस प्रार्थना के साथ अपने बच्चों का पालन पोषण कर रहे हैं कि उन्हे अफगानिस्तान, या सुदान, या भारत, या चीन, या सेन्ट्रल अफीका रिपब्लिक में सुसमाचार प्रचार के लिए भेजें और ऐसा भी हो सकता है कि वे कभी भी वापिस न आएँ। और हममें से शायद ही कोई कहेगा, ''मैं तो चाहता कि वे नाष होकर नरक की ओर जाएँ।'' परंतु यदि हम हमारे देष की सुविधाओं में ही जीवन जीते और कभी भी दूसरे देषों में सुसमाचार ले जाने के बारे में नही सोचते हैं तो हम अप्रत्यक्ष तरीके से हम उसी कथन को कहते हैं। योना की कहानी भी इसी के बारे में है।

थोड़ी सी पृष्ठभूमि, 2 राजा 14:25 में हम देखते हैं कि प्रभु का वचन योना भविष्यद्वक्ता के पास आता है। और वह उस वचन को उत्तरी क्षेत्र के राजा यारोबाम के पास लेकर जाता है। वचन था, ''उत्तर की अपनी सीमा को ज्यों का त्यों कर कि स्वयं को एक बड़े राष्ट्र एवं इस्राएल के सबसे बड़े शत्रु अष्षूर से बचा सके।'' अतः वचन योना के पास आया, ''तुझे सीमा ज्यों की त्यों' करनी है'' राजा ने ऐसे ही किया। और योना एक राष्ट्रीय हीरो, इस्राएलियों का इस्राएली था। वह स्वतंत्रता एवं उत्तर में अष्षूर से सुरक्षा का वचन लेकर आया।

इस पुस्तक में इस्राएल के कई राष्ट्रीय हीरो के बारे में लिखा है जिनमें योना की कहानी बड़ी थी। दुर्भाग्यपूर्ण, यह कहानी योना के बारे में नही कही गई थी। योना की खीज से बढ़कर यह कहानी केवल एक नही वरन् सभी राष्ट्रों के प्रति परमेष्वर के दिल को दिखाती है।

योना 1:1, ''यहोवा का यह वचन अमितै के पुत्र योना के पास पहुंचा कि उठकर उस बड़े नगर नीनवे को जा, और उसके विरूद्ध प्रचार कर; क्योंकि उसकी बुराई मेरी दृष्टि में बढ़ गई है।'' थोड़ी सी पृष्ठभूमि, मैने इस्राएल के उत्तर में अष्षूर के बारे में कहा। अष्षूर केवल इस्राएल में ही नही वरन् सभी राष्ट्रों में अपने पाप, घमंड, गर्व एवं युद्ध की क्रूरता के लिए प्रसिद्ध था। वे केवल दूसरे राष्ट्रों को अपने कब्जे में नही लेते हैं परंतु वहाँ के सभी लोगों को मार डालते थे। राजा के एक कथन को सुनें, यह योना के समय के बहुत पहले था, वह युद्ध के बचे हुओं के बारे में बता रहा है। ''कई बंदियों को मैने आग में जला दिया, कुछों की बाँहों को काट डाला, कईयों के नाकों, कानों एवं अंगुलियों को काट डाला। कई सैनिकों की आँखों को निकाल फेंका। मैने उनके नौजवानों और औरतों को मौत के घाट उतार दिया। अष्षूरों के बारे यह बात प्रचलित थी।

और आप शायद अंदाजा न लगाएँ कि अष्षूर की राजधानी कौनसी थी? नीनवे, इस्राएल के उत्तरी राज्य का सबसे बड़ा दुष्मन, एवं अपने पाप एवं क्रूरता के लिए कुप्रसिद्ध। परमेष्वर योना के पास आकर कहता है, ''मेरे भविष्यद्वक्ता, मैं चाहता हूँ कि तुम जाकर नीनवे में जाकर प्रचार करो।'' पद 3 कहता है, ''परंतु योना खड़ा हुआ।'' जब भी तुम परमेष्वर की आज्ञा के साथ 'परंतु' शब्द को देखते हो तो समझ लेना कि कुछ गड़बड़ है। ''परंतु योना परमेष्वर की उपस्थिति से तर्षीष की ओर दौड़ा। वह नीचे याफा की ओर गया और तर्षीष के जहाज पर चढ़ा। उसके किराया दिया और तर्षीष जाने वाले उस जहाज पर चढ़ गया परंतु परमेष्वर की उपस्थिति से दूर।''

मैं न्यू ओरलीन्स में रहता था। आप कल्पना कर सकते हैं कि आप ओरलीन्स में रहते हैं और परमेष्वर का वचन आपके पास कहता है, ''अटलांटा की ओर जाएँ'' और यह न्यू ओरलीन्स के बंदरगाह पर जाकर अटलांटा जाने की बजाय मेक्सिको को जाने वाले जहाज में चढ़ने के समान होगा। योना बिल्कुल विपरीत दिषा की ओर जा रहा है, भौगोलिक तौर पर एवं आत्मिक तौर पर। वह परमेष्वर की उपस्थिति से दूर, आत्मिक रूप से नीचे की ओर जा रहा है। पद इसे बताता भी है। वह नीचे याफा की ओर जाता है जहाँ उसे एक जहाज मिलता है और जहाज के तट में सो जाता है। अतः वह परमेष्वर से दूर जा रहा है।

उस जहाज पर एक बड़ा, विषाल तुफान आता है। और जहाज पर मौजूद हर अन्यजातीय व्यक्ति अपने अपने संभव तरीके से अपने देवताओं से प्रार्थना करते है कि इस समस्या से बच निकलें। वे खोजना चाहते हैं कि तुफान की वजह क्या है। कप्तान उस जगह पर जाता है जहाँ योना लेटा हुआ है और उसे उठने को कहता है। योना उपर आता है, और उसे समझने में बिल्कुल भी देर नही लगती कि उन अन्यजातीय लोगों का इस तुफान से कोई लेना देना नही है। यह सब कुछ भविष्यद्वक्ता की अनाज्ञाकारिता से जुड़ा था। और सबको पता चलता है कि योना ही इस सबका कारण और वे उसे उठाकर समुद्र में फेंक देते हैं। जब वह समुद्र के पानी में डूब रहा था, जहाज के आस पास का पानी शांत हो जाता एवं तुफान थम जाता है। जहाज पर मौजूद लोग योना के परमेष्वर की स्तूति करते हैं, जबकि योना समुद्र में डूब रहा होता है।

और उस वक्त, अध्याय 1 के पद 17 में, ''यहोवा ने एक बड़ी मछली को ठहराया था कि योना को निगल ले; और योना उसके पेट में तीन दिन और तीन रात पड़ा रहा।'' हमें यहाँ का अधिक वर्णन पता नही है। हमें नही पता कि वह व्हेल थी या कोई और बड़ी मछली थी। और मजेदार बात यह है कि यहाँ हो रही हर बात में प्राकृतिक दखलंदाजी है। सच्चाई यह है कि यह अलौकिक है। यह ऐसा नही कि किसी को कोई जानवर खा लेता है और वह कुछ दिनों के लिए उसके पेट में, मछली के पेट में मछली के अपषिष्ट के रूप

में प्रभु के साथ चुपचाप रहता है। ऐसा अक्सर नही होता है। धन्यवाद, कि यहाँ ऐसा हुआ। तीन दिन तक, योना मछली के पेट में है और वहाँ वह प्रार्थना करता है। अध्याय 2, आप इस प्रार्थना को देखते हैं, पद 9 में वह परमेष्वर से प्रार्थना करता है जिसका अंत यह है कि ''उद्धार यहोवा का है।'' वह जानता है कि परमेष्वर उसे बचाता है।

परंतु मजेदार बात, आप उस प्रार्थना में एक महत्वपूर्ण बात को छुटते हुए देख सकते हैं। आप प्रार्थना में कहीं भी योना की तरफ से किसी प्रकार का पश्चाताप या अपने पाप के प्रति पापबोध दिखाई देता हो। कहीं नही देख सकते हैं कि वह मछली के पेट में पड़ने के प्रति कोई पाप का बोध या पश्चाताप कर रहा हो। अतः पद 10 में, प्रभु ने मछली से बात की और उसने योना को सूखी भूमि पर उगल दिया। यह अच्छी तष्वीर नही है। कल्पना करके देखें कि एक व्यक्ति को मछली के द्वारा उगल दिया जाना कैसा लगता होगा, सब प्रकार की गंदगी, बचा खाना और एक आदमी। निसंदेह, लोगों ने उसे देखा। और यदि नही देखा तो उन्होने सूँघा।

योना खड़ा होता है और चलना शुरू होता है, लोग उसे घेरे होते हैं। एक मनुष्य, जिसने तीन दिन मछली के पेट में बिताए, विश्वास नही होता, उसे देखो तो सही। कहानी बताई जाती है। तीन दिन मछली के पेट में रहने के बावजूद एक व्यक्ति जिंदा है। अध्याय 3 में वह नीनवे में जाता है। अब आइए, नीनवे का थोड़ा इतिहास देखते हैं। नीनवे शब्द का शाब्दिक अर्थ मछली का 'ाहर है। उनके बहु–ईष्वर विष्वास के तहत एक ऐसा समय था कि कई देवताओं में एक देवता, जो आधा मछली और आधा मनुष्य था, समुद्र से नीनवे में आया जो अपने साथ कई कलाकृतियाँ और वैज्ञानिक वस्तुएँ लेकर आया।

और अब एक सच्चे परमेष्वर के तहत, निगला जा सकने वाला भविष्यद्वक्ता, उस शहर, मछली के शहर में आता है और एक आसान सा न्याय एवं दण्ड से संबंधित आठ बिन्दु संदेष का प्रचार करता है। योना कहता है, चालीस दिन में, प्रभु आपको नाष करेगा।'' अपने संदेष में वह कहीं भी नही कहता है कि ''प्रभु आपको माफ करेगा, यदि तुम अपने पाप से फिरो तो प्रभु अपने दण्ड को फेर लेगा।'' परंतु उसका पूरा प्रचार केवल दण्ड एवं न्याय था। परंतु परमेष्वर के अनुग्रह से नीनवे के लोगों फिरे। लोग संदेष सुनते हैं। राजा संदेष सुनता है। वह सब लोगों को बुलाता है, ''हमें पश्चाताप और उपवास करना है।'' वह जानवरों से भी उपवास करने को कहता है।

अतः नीनवे के हर व्यक्ति एवं सब कुछ पश्चाताप करता एवं परमेष्वर की ओर फिरता है। 3:10 में लिखा है, '' जब परमेश्वर ने उनके कामों को देखा, कि वे कुमार्ग से फिर रहे हैं, तब परमेश्वर ने अपनी इच्छा बदल दी, और उनकी जो हानि करने की ठानी थी, उसको न किया। हम यहीं पर खुषी खुषी से कहानी खत्म होने की आषा करते हैं। योना, हम सोचते हैं, कि आज्ञाकारी रहा। नीनवे के लोगों ने पष्चाताप किया, परंतु सच्चाई यह है कि तीन अध्यायों के बाद, अभी तो अध्याय 4 में योना की पुस्तक के मुख्य विषय के लिए मंच तैयार हुआ है।

सुनिए, जब शहर ने पश्चाताप किया तो क्या हुआ, पद 1, ''इससे योना बहुत नाखुष हुआ और वह क्रोधित हुआ।'' यह क्या है? भविष्यद्वक्ता प्रचार करता है। लोग परमेष्वर की ओर फिरते हैं, और भविष्यद्वक्ता पागल है। और यहाँ हम पहली बार, योना के परमेष्वर की बात को नही मानने एवं नीनवे से भाग जाने के कारण का पता चलता है। पद 2, ''और उसने यहोवा से यह कहकर प्रार्थना की, हे यहोवा जब मैं अपने देश में था, तब क्या मैं यही बात न कहता था? इसी कारण मैं ने तेरी आज्ञा सुनते ही तर्शीश को भाग जाने के लिये फुर्ती की; क्योंकि मैं जानता था कि तू अनुग्रहकारी और दयालु परमेश्वर है, विलम्ब से कोप करनेवाला करूणानिधान है, और दुःख देने से प्रसन्न नहीं होता।''

क्या आपको कुछ पता चला? योना नीनवे से भागा, इसलिए नही कि वह नीनवे की पराजय से चिंतित था, परंतु इसलिए कि वह नीनवे की सफलता से डरता था। वह जानता था कि क्या होगा। और वह क्रोधित था। ऐसा लगता है कि परमेष्वर के मुँह की ओर देखकर कह रहा है, ''मैं जानता था कि तुम उनके प्रति अपना प्रेम दिखाओगे। तुमने उनके प्रति अपना प्रेम क्यों दिखाया? इसीलिए मैं आपकी बात नही मानना चाहता।'' पद 3, वह कहता है, ''सो अब हे यहोवा, मेरा प्राण ले ले; क्योंकि मेरे लिये जीवित रहने से मरना ही भला है। वह पद 5 में षिकायत कर रहा है। वह शहर से निकलकर उसके पूर्व में जाकर बैठ गया। वहाँ अपने लिए एक जगह बनाई। वह वहाँ बैठकर देखना चाहता था कि शहर का क्या होगा।

ज्बकि यह पूरा शहर पश्चाताप के साथ परमेष्वर की ओर फिर रहा है, भविष्यद्वक्ता प्रार्थना या आराधना में अगुवाई करने उनके बीच में नही है। इसकी बजाय, वह षिकायत करता हुआ शहर के बाहर जाकर शहर के साथ होने जा रही घटना का इंतजार कर रहा था। पद 6, ''तब यहोवा परमेश्वर ने एक रेंड़ का पेड़ लगाकर ऐसा बढ़ाया कि योना के सिर पर छाया हो, जिस से उसका दुःख दूर हो। योना उस रेंड़ के पेड़ के कारण बहुत ही आनन्दित हुआ।'' योना पद 1 में नीनवे और उसके लोगों के पश्चाताप करने की वजह से अत्यधिक पागल बनने से लेकर पौधे के द्वारा छाया देने से अत्यधिक खुषी की ओर आता है।

और जब अगले दिन पौ के फटने पर क्या हुआ? पद 7, '' बिहान को जब पौ फटने लगी, तब परमेश्वर ने एक कीड़े को भेजा, जिस ने रेंड़ का पेड़ एसा काटा कि वह सूख गया। जब सूर्य उगा, तब परमेश्वर ने पुरवाई बहाकर लू चलाई, और घाम योना के सिर पर ऐसा लगा कि वह मूर्च्छा खाने लगा; और उस ने यह कहकर मृत्यु मांगी, मेरे लिये जीवित रहने से मरना ही अच्छा है।'' और परमेष्वर ने योना से कहा,'' यह सवाल उसने दूसरी बार पूछा है, ''क्या तेरा क्रोध भड़का है, क्या वह उचित है?'' इस बार वह जोड़ता है, ''पेड़ के कारण।'' योना इस वक्त ''हाँ'' कहता है। मैं उचित कर रहा हूँ। इतना क्रोध की मरने तक को तैयार था।

और तब हम पुस्तक के दो महत्वपूर्ण पदों, पद 10 और 11 पर आते हैं। और प्रभु ने कहा, ''जिस रेंड़ के पेड़ के लिये तू ने कुछ परिश्रम नहीं किया, न उसको बढ़ाया, जो एक ही रात में हुआ, और एक ही रात में नाश भी हुआ; उस पर तू ने तरस खाई है। फिर यह बड़ा नगर नीनवे, जिस में एक लाख बीस हजार से अधिक मनुष्य हैं, जो अपने दहिने बाएं हाथों का भेद नहीं पहिचानते, और बहुत घरेलू पशु भी उस में रहते हैं, तो क्या मैं उस पर तरस न खाऊं?''

और कहानी उससे भी अध्कि खुषी से नही समाप्त होती है। परंतु एक प्रष्न के साथ इस कहानी का अंत होता है। यह प्रष्न योना के दिल में और आज परमेष्वर के हर बच्चे के दिल में गूँज रहा है। इस कहानी का विषय क्या है? परमेष्वर इस कहानी के द्वारा अपने लोगों को क्या सिखाना चाहता है?

पहले, देखें कि हमने परमेष्वर और योना के बारे में क्या सीखा? इस पूरी पुस्तक में हम परमेष्वर के कई स्वभावों को देख सकते हैं। नबंर एक, उसका सर्वोच्च नियंत्रण। इस पुस्तक में हम परमेष्वर की सर्वोच्चता एवं मनुष्य की जिम्मेदारी के बीच में एक आपसी संबंध को देख सकते हैं। हम मनुष्यों को, लोगों को विभिन्न निर्णय लेते हुए और परमेष्वर से दूर भागते हुए देखती है। मल्लाह विभिन्न देवताओं की आराधना करते हैं। नीनवे, वे लोग अपनी मनमर्जी करते और अंत में पश्चाताप करते हैं। योना बाहर निकलता और षिकायत करता है। हम लोगों को अपने कार्यों के लिए जिम्मेदारी देखते हैं। साथ ही साथ, हम इस कहानी के हर विवरण की जानकारी रखने वाले परमेष्वर को भी देख सकते हैं। उसका प्रकृति पर अधिकार है। अध्याय 1:4, ''परमेष्वर ने समुद्र पर बड़ी आँधी चलाई।'' प्रभु ने उसे किया।

पद 17, ''यहोवा ने एक बड़ी मछली को ठहराया था कि योना को निगल ले; और योना उस मगरमच्छ के पेट में तीन दिन और तीन रात पड़ा रहा।'' और परमेष्वर ने कहा, 'उगल दे' और उसने उगल दिया। अध्याय 4:6, ''तब यहोवा परमेश्वर ने एक रेंड़ का पेड़ लगाकर बढ़ाया।'' पद 7, ''तब परमेश्वर ने एक कीड़े

को भेजा'' पद 8, ''तब परमेश्वर ने पुरवाई बहाकर लू चलाई'' क्या आप देख सकते हैं? परमेष्वर आँधी, कीड़े इत्यादि पर नियंत्रण रखता है। उसका समुद्र पर नियंत्रण है, कीड़े पर भी नियंत्रण है। उसका हर चीज पर नियंत्रण है। सृष्टि में ऐसी कोई भी वस्तु नही है जो उसकी सर्वोच्चता के नियंत्रण में नही हो।

आप इस पुस्तक में प्रकृति एवं सभी राष्ट्रों पर सर्वोच्चता को देख सकते हैं। अष्षूर का भाग्य परमेष्वर के हाथ में है। यदि परमेष्वर इसे नाष करना चाहे, वह कर सकता है यदि वह नाष करना नही चाहता, तो वह नही करेगा। वह केवल अन्यजातीय राष्ट्र पर ही सर्वोच्च नही है वरन् उसकी सर्वोच्चता अपने भविष्यद्वक्ता पर भी है। जो कि वास्तव में, सचमुच एक खुषखबरी है। केवल योना ही नही, वरन् हम सब के लिए। और क्योंकि परमेष्वर के पास पूरी प्रकृति, सभी राष्ट्रों, स्वर्ग एवं धरती पर सर्वोच्च अधिकार है, परमेष्वर के लोग उसकी योजनाओं से भाग नही सकते हैं।

प्रकृति एवं राष्ट्र परमेष्वर के अध्किार तले हैं। और आप कभी भी उससे भाग नही सकते हो। यह एक खुषखबरी है। वास्तव में यदि हम देखें तो योना का परमेष्वर की उपस्थिति से भागना हमारे द्वारा किए जाने वाले हर एक पाप ही तष्वीर है। परमेष्वर से दूर भागना – मैं यह कभी न करूँगा। परमेष्वर का धन्यवाद करते हैं कि हमारे अविष्वासयोग्य होने के बावजूद वह विष्वासयोग्य है। और परमेष्वर के लोग उसकी योजनाओं से नही भाग सकते हैं। उसका सर्वोच्च नियंत्रण उसकी दयालुता की ओर अग्रसर करता है। इस पुस्तक में उसकी करूणा की विषालता देखें।

इस पुस्तक में हर चीज उथली पुथली पड़ी है। योना फंसा पड़ा है। मल्लाहों के द्वारा अन्य देवताओं की आराधना – सब कुछ गड़बड़ भरा। नीनवे का शहर राजकीय तौर पर बिखरा पड़ा है। परंतु हम परमेष्वर की करूणा को उन पर आते हुए देखते हैं। हम पापी अन्यजातियों, अन्य देवताओं की आराधना करने वाले मल्लाहों के प्रति उसकी करूणा को देख सकते हैं। वे भी योना के समान ही समुद्र में फेंके जाने के योग्य हैं, परंतु परमेष्वर की करूणा उन्ही उसकी आराधना करने को प्रेरित करती है।

यह अध्याय 1:16 में आरंभिक पद है, जहाँ वह उन अन्यजातीय मल्लाहों को एक सच्चे परमेष्वर की आराधना करने के लिए लेकर आता है। नीनवे का बड़ा शहर, सोच कर देखें, शताब्दियों से, कई सालों से वे पापी, घमंडी, क्रूर रहे हैं। परंतु एक क्षण में वे परमेष्वर की ओर मुड़ते एवं अपने विनाष से बच जाते हैं। यह पापी व्यक्तियों एवं स्वार्थहीन भविष्यद्वक्ताओं पर की गई करूणा है। परमेष्वर गैर धार्मिक ही नही, धार्मिक व्यक्तियों पर भी करूणा दिखाता है। वह धर्मियों को ही नही, स्व–धर्मियों को भी अपनी करूणा

दिखाता है। क्या यह अच्छा नही है कि परमेष्वर की क्षमा करने की क्षमता हमारे पाप करने की क्षमता से बड़ी है? हम बड़ें पापी हैं। परंतु हमारा उद्धारकर्ता उससे भी बड़ा है। हमारे पाप से भी बड़ी है हमें बचाने की उसकी ताकत। उसके सर्वोच्च नियंत्रण, करूणामयी दया को देखें, सब कुछ उसकी सर्वभौमिक संभाल को दिखाता है। इस पुस्तक में यह स्पष्ट है कि परमेष्वर अपने लोगों से प्रेम करता है। योना भी शामिल है। परमेष्वर का प्रेम एवं संभाल पाने के योग्य लोगों में योना का नंबर सबसे उपर है। वह परमेष्वर से दूर भाग रहा है। और हम कहीं भी उसे अन्यजातीय मल्लाहों या उस शहर की तरह, अपनी गलती अथवा पाप से पष्चाताप करते हुए नही देख सकते हैं।

अतः परमेष्वर अपने लोगों से प्रेम करता है। परमेष्वर अपने लोगों से प्रेम करता है कि उनके द्वारा सब लोगों से प्रेम कर सके। उत्पति 12 में परमेष्वर ने अब्रहाम से कहा, वही योना 4 में भी है। ''अब्रहाम, मैं तुझे आषीष दूँगा कि तू कई राष्ट्रों के लिए आषीष बने।'' यह केवल इस्राएलियों के लिए नही, वरन् सभी राष्ट्रों के लिए है कि वे मेरे अनुग्रह, करूणा, भलाई को जान सकें। योना 4 में यही सच होता है। परमेष्वर अपने लोगों से प्रेम करता है कि उनके द्वारा सब लोगों से प्रेम कर सके। परंतु यह हमने पुराने नियम में देखा है। परंतु परमेष्वर के लोग उनके लिए उसकी आषीष को काट रहे हैं। वे अपने स्वार्थ में संतुष्ट हैं, आराम से बैठे हैं, खुद आषीष पाते हैं और परमेष्वर की महिमा को सभी राष्ट्रों में नही फैलने देते।

केवल पुराने नियम में ही नही, इसे हम नए नियम में भी देखते हैं। पूरे कलीसियाई इतिहास में हम इसे देख सकते हैं। भाईयों और बहिनों, हमें हमसे पहले घटी हुई बातों को देखना है, परमेष्वर के सर्वभौमिक उद्देष्य में हमेषा परमेष्वर के राष्ट्रीय लोगों ने विरोध उत्पन्न किया है। पुराने नियम में इस्राएल के लोगों में यह सच है, परंतु हम नए नियम में भी हम यहूदियों और गैर–यहूदियों में विभाजन को देख सकते हैं। क्या हम राष्ट्रों को कलीसिया में आने देंगे? कलीसिया का इतिहास देखें, और आप देख सकते हैं कि लोग, पासवान, अगुवे कह रहे हैं कि हमें भारत में अन्यजातियों के पास सुसमाचार ले जाने की जरूरत क्यों है। यदि परमेष्वर चाहता है तो उन्हे बचा लेगा। हमें यहीं रहना है।

और आप पूरे इतिहास में परमेष्वर के उद्देष्य के विरोध में परमेष्वर के लोगों को देख सकते हैं। और हर बार हम देखते हैं कि परमेष्वर सभी राष्ट्रों में अपनी महिमा के प्रति ख्याल रखता है। परमेष्वर के बारे में हम यह सीखते हैं। योना के द्वारा हम परमेष्वर के बारे में यही सीखते हैं। योना को परमेष्वर यही सिखा रहा है, अपना सर्वोच्च नियंत्रण, अपनी करूणामयी दया, अपनी सर्वभौमिक संभाल। और यही परमेष्वर योना की पुस्तक में कर रहा है। उद्देष्य केवल उसे नीनवे में लाना नही था। यदि मुख्य विषय यह होता तो, नीनवे की

मुख्य उद्देष्य होता तो परमेष्वर योना के भाग जाने के बावजूद एक और अच्छे भरोसेमंद भविष्यद्वक्ता को भेज देता और जैसे तैसे प्रचार करवा देता। वे लोग पश्चाताप करते और इस प्रकार पुस्तक समाप्त हो जाती। परंतु इसकी बजाय, इसमें हम एक भविष्यद्वक्ता के दिल को बनाए जाने की कहानी देखते हैं।

योना में क्या बनाया जाना जरूरी था? एक, वह खुद के विचारों को परमेष्वर की इच्छा से ज्यादा महत्व देता था। योना की अपने जीवन की योजना कभी भी संसार में परमेष्वर की इच्छा के द्वारा रौंदी न जाए। उसने अपना ध्यान स्वयं की दिषा, स्वयं की दौड़, स्वयं के भाग्य और प्राण पर लगा रखा था। और वह खुद निर्धारित करने जा रहा था कि उसका जीवन किस प्रकार का हो, परमेष्वर नही। पुस्तक की अंतिम पद तक, हम योना को परमेष्वर से बढ़कर स्वयं की योजनाओं को महत्व देते हुए देख सकते हैं। दो, योना ने दूसरे राष्ट्रों में सुसमाचार पहुँचाने से अधिक स्वयं के राष्ट्र की भलाई चाही।

जो वचन योना यारोबाम तक लेकर आया, वह राष्ट्रीय हीरो था। और वह चाहता था कि परमेष्वर आकर कहे, ''अब अष्षूर जा जहाँ हमने अभी हमें सुरक्षा देने के लिए सीमा बनाई है। वहाँ जाकर प्रचार कर कि उनका छुटकारा, उद्धार आने जा रहा है।'' योना कहता है, ''कभी नही। मैं उस शहर में सुसमाचार के जाने से अधिक चाहता हूँ कि इस्राएल का भला हो।'' यह रोचक है। योना 1:9 देखें, पूरी पुस्तक में योना का पहला शब्द, वह इन मल्लाहों को कहता है, पद 9, ''मैं इब्री हूँ।'' उसके पहले शब्द। उनके चारों ओर उठ रहे एवं उनके लिए मृत्यु का खतरा बन बैठे एक बड़े तुफान के बीच में, उसकी पहली पहचान, ''मैं इब्री हूँ।'' स्वयं के राष्ट्र के प्रति घमंड, स्वयं के राष्ट्र की भलाई की इच्छा ने दूसरे राष्ट्रों के लिए सुसमाचार की जरूरत को कुचल रख दिया।

तीन, वह परमेष्वर के स्वभाव को अपने दिमाग में जानता था, परंतु उसने अपने दिल में परमेश्वर की करूणा को अनदेखा कर दिया। अध्याय 2 में योना की प्रार्थना और फिर अध्याय 4:2 में उसके कथन को देखें, ''मैं जानता था कि तुम दयालु, तरस खाने वाले परमेष्वर, क्रोध करने में धीमे और प्रेम से भरे हो।'' वह सीधा निर्गमन 34 का उद्धरण ले रहा है, जहाँ परमेष्वर ने अपने उन लोगों को महिमा दिखाई जिन्हे उसने नियम दिए थे। वह परमेष्वर को अपने दिमाग में जानता है, परंतु इसके बावजूद, वह परमेष्वर की तरस से बढ़कर अपनी छाया के प्रति चिंतित है। और वह जानता है कि परमेष्वर ने उन लोगों के सामने स्वयं को परिचित करवाया है।

परमेष्वर के भविष्यद्वक्ता को देखें, जो अपने दिमाग में जानता है कि परमेष्वर कौन है। तौभी बिल्कुल भी इच्छुक नही है कि उसका तरस पूरे संसार में फैले। परंतु वह दूसरों के अनंत भविष्य की बजाय स्वयं की खोखली इच्छाओं के प्रति चिंतित था। साफ तौर पर कहा जाए, योना लोगों की बजाय पेड़ के प्रति चिंतित था। वह लोगों के उद्धार की बजाय स्वयं की छाया के प्रति चिंतित था। इस छोटी सी चीज के सूखते ही वह कुपित हो गया, परंतु एक पूरे शहर को परमेष्वर के न्याय में फेंक देने के लिए तैयार था। दूसरों के अनंत भविष्य की बजाय स्वयं की खोखली इच्छाओं के प्रति चिंतित, अनंतता के लिए हजारों लोगों के भविष्य की बजाय एक पेड़ के प्रति चिंतित था।

यह सब हमें इस अंतिम सच की ओर लेकर आता है जो हमने योना में पढ़ा और यही इस सबका सार है। वह अपने जीवन की परमेष्वर की करूणा को संसार में परमेष्वर के मिषन के साथ जोड़ने में नाकामयाब रहा। अध्याय 2 में पुकारने वाले योना को करूणा मिलना ठीक है, ''उद्धार परमेष्वर का है।'' परंतु वह उस करूणा को दूसरे लोगों तक नही पहुँचाना चाहता था। उसका अपने जीवन में परमेष्वर की करूणा पाना सही था, परंतु वह संसार में परमेष्वर के मिषन के संबंध में कुछ भी नही करना चाहता था। यह पुराने नियम के एक भविष्यद्वक्ता का बहुत ही अच्छा एवं चमकदार उदाहरण नही है। परंतु हम योना पर कुछ अधिक कठोर हैं, आइए देखें कि हम उसके बारे में क्या सीखते हैं और खुद से पूछें कि क्या ये स्वभाव हममे ंतो नही हैं। क्या हम भी अक्सर हमारी इच्छाओं को परमेष्वर की इच्छा से अधिक महत्व देते हैं? हम वहाँ नही जाना चाहते जहाँ वह हमें भेजता है, उसका कहा कि हम नही करना चाहते क्योंकि हमने पहले से ही कार्य योजना बना ली है।

क्या हमारे लिए यह संभव है कि हम अपने ही राष्ट्र में आराम से बैठे रहें, और उस विचार को सोचें ही नहीं कि हमें दूसरे राष्ट्रों तक सुसमाचार पहुँचाना है? यह आम तौर पर हमारी आज की कलीसियाओं की हालत को दिखाती है। क्या यह संभव है कि हम परमेष्वर को अपने दिमाग में जानें और उसकी करूणा को दिल में नही महसूस कर सकें? क्या यह संभव है कि हम इन वचनों को सुनें और बाद में जब किसी व्यक्ति को नरक की ओर जाते हुए देखें तो उसके बारे में बिना किसी ख्याल के वहाँ से निकल जाएँ?

क्या यह संभव है कि हम हमारी खोखली इच्छाओं, सहूलियतों, जीवन की छोटी छोटी बातों ने हमें इतना बहरा कर दिया है कि हमें हमारे शहर एवं संसार भर में बिना परमेष्वर के अनंतता से दूर चलते जा रहे हजारों लोगों की जरूरत तक न सुनने पाए? क्या हमारे स्वार्थी लगाव छोटी छोटी बातों से इतना चिपक गए हैं कि अनंत सच्चाई हमारी आँखों से ओझल हो गई है? क्या हम खुद को मिली परमेष्वर की दया में

इतने डूब गए हैं कि संसार में परमेष्वर के बड़े मिषन के बारे में हमें कोई चिंता ही नही है। योना के हृदय में स्वयं की तष्वीर को देखें। और वहीं पर रूकें नही। इससे निराषा जगेगी। परंतु हम योना की पुस्तक में देखते हैं कि पूराने नियम में बताई गई हर बात, अंततः यीषु की ओर इषारा करती है।

इस पुस्तक में हम यीषु के बारे में क्या सीखते हैं? इसके बारे में दो स्तरों पर सोचें। पहला, यह दोनों भविष्यद्वक्ताओं, योना और यीषु में अंतर को दिखाता है। मैं यीषु को कई भविष्यद्वक्ताओं में एक नही वरन् सबसे महान, विषेष एवं सर्वोच्च भविष्यद्वक्ता, महायाजक एवं राजा के रूप में प्रस्तुत कर रहा हूँ। हमने योना के स्वार्थ को देखा। हमने देखा कि उसने किस प्रकार परमेष्वर के अनुग्रह की जरूरत के बारे में झिझकते हुए लोगों से प्रचार किया। झिझक एक अच्छा शब्द है। वह नीनवे नही जाना चाहता था। वह अनाज्ञाकारी, क्रोधित, षिकायतकर्ता इत्यादि है। फिर भी वह उस शहर में जाता है जहाँ उसके दुष्मन भरे पड़े हैं। और वहाँ परमेष्वर के वचन का प्रचार करता है और परिणामस्वरूप, नीनवे के लोग परमेष्वर के दण्ड से बच जाते हैं।

यही कहानी हमने योना के संबंध में देखी। परंतु यह कहानी वास्तव में यीषु भविष्यद्वक्ता की ओर इषारा करती है जो एक स्वार्थी नही वरन् स्वार्थहीन भविष्यद्वक्ता है। झिझकते हुए नही परंतु बिना किसी झिझक के उसने परमेष्वर के अनुग्रह को पाने के लिए पापियों को मार्ग दिखाया। उसमें कोई झिझक नही है। यह अपना देष छोड़ता है, अर्थात अपना सिहांसन एवं महिमा। वह सव्यं हो नम्र करता है, एवं एक मनुष्य के रूप में प्रकट होता है। यह केवल एक शहर को नही, परंतु अपने दुष्मनों के निमित्त क्रूस तक जाता है। उन स्त्री पुरूषों की खातिर जिन्होने उसका विरोध किया। स्त्री एवं पुरूष जिन्होने उसके हाथों और पैरों में कीलें ठोकीं। वह बिना झिझक के उन्हे क्रूस पर स्वीकार करता है। और परिणामस्वरूप लोग, केवल एक देष के नही वरन् संपूर्ण संसार के लोग परमेष्वर के क्रोध से हमेषा हमेषा के लिए बच सकते हैं।

परिणामस्परूप, कोई भी, किसी भी देष का व्यक्ति, और वास्तव में हर देष, हर गोत्र, हर भाषा एवं हर व्यक्ति परमेष्वर के क्रोध से बचकर अपने उद्धार का अनुभव कर सके। यीषु हमारा महान भविष्यद्वक्ता एवं याजक एवं राजा है। उसकी स्वार्थहीनता के लिए धन्यवाद। अतः इसमें अंतर है। क्या कोई तुलना है? और यहीं पर यीषु मसीह खुद में और योना की कहानी में अंतर बनाते हैं। नए नियम की पहली पुस्तक मती 12:38 पर आएँ। इस कहानी को दूसरे सुसमाचारों में भी बताया गया है, परंतु मैने मती को ही निकालने के लिए इसलिए कहा क्योंकि मती मुख्य तौर पर यहूदियों के लिए लिख रहा था, ऐसे लोग जो स्वयं के राष्ट्र के

प्रति घमंड से भरे थे। यह भी सोचा जा सकता था कि यीषु मसीह, मसीहा केवल इस्राएल के लोगों के लिए भेजा गया है।

यीषु कुछ धार्मिक अगुवों के साथ बातचीत कर रहे और मैं सुनना चाहता हूँ कि वे लोग मती 12:38 में क्या कह रहे हैं, 'कुछ शास्त्रियों और फरीसियों ने उसे (यीशु को) उत्तर दिया, 'गुरू, हम आपसे कोई चिन्ह देखना चाहते हैं।' परंतु उसने उत्तर दिया, 'एक दुष्ट एवं अधर्मी जाति चिन्ह खोजती है। परंतु योना के चिन्ह को छोड़, और कोई चिन्ह नही दिया जाएगा।' (कौन?) योना। जिस प्रकार योना तीन दिन और रात मछली के पेट में रहा, उसी प्रकार मनुष्य का पुत्र धरती के तल में रहेगा। नीनवे के लोग भी इस पीढ़ी के साथ न्याय के लिए खड़े होकर दोष लागाएँगे। क्योंकि उन्होने योना के प्रचार के बाद मन फिराया और देखो, यहाँ जो है वह योना से भी महान है।'

तो सहमति यह है। इन धार्मिक अगुवों को चिन्ह चाहिए। प्रमाणित करो कि तुम परमेश्वर की ओर से आए हो और यह कि जो तुम कह रहे हो वह सही है या नही।और यीशु कहते हैं, ''तुम हमेशा चिन्ह की खोज में रहते हो।'' और हम इस बात को पूरे सुसमाचार में कई स्थानों पर देख सकते हैं। और वो कहते हैं कि आपको इसके अलावा और कोई चिन्ह नही मिलेगा। योना का चिन्ह। और यीशु योना की कहानी की ओर इशारा करते हैं। वे कहते हैं, ''वही तश्वीर अब मुझमें प्रकट होगी। और इस प्रकार आप जानोगे कि मैं परमेश्वर हूँ। योना की ओर देखें। वहाँ पर चमत्कारिक छुटकारे को देखें।'' यीशु कह रहे हैं, ''योना मछली के पेट में तीन दिन रहने के बावजूद जीवित था।''

जैसे हमने पहले बात की, अधिकतर विद्वान मानते हैं कि नीनवे के लोग एवं मछली का शहर जानता था कि उसने तीन दिन मछली के पेट में बिताए हैं। और एक व्यक्ति उनके बीच में आता है जिसे मछली से उगला है, लोग उसकी सुनने को तैयार होंगे। यह एकमात्र परमेश्वर की ओर से भविष्यद्वक्ता होगा जिसे परमेश्वर ने मछली से बचाया है और उन्होने उसके वचन को सुना और पश्चाताप किया। और यही था, चिन्ह, प्रमाण, अथवा स्पष्ट सच्चाई। ''नीनवे, सुनो, इस व्यक्ति ने तीन दिन एक मछली के पेट में बिताए हैं। तुम्हे उसको सुनना है।'' अतः यीशु मसीह चिन्ह की माँग करने वाले इन धार्मिक अगुवों को कहता है, ''तुम जानना चाहते हो ना कि मैं परमेश्वर की ओर से हूँ?'' क्या आप भी जानना चाहते हैं कि यीशु परमेश्वर की ओर से हैं? सुनिए, कब्र में तीन दिन रहने के बावजूद भी वे जिंदा हैं। यह चिन्ह है। यह सचमुच विशेष है कि एक व्यक्ति मछली के पेट में तीन दिन तक रहता है और बाहर आने पर बोलता है। 'तीन दिन और तीन रात' के उपयोग में दिन के किसी हिस्से को भी शामिल किया गया है। मछली के पेट में तीन दिन

तक रहकर बोलते हुए बाहर आना एक बात है। परंतु एक कब्र में तीन तक गाड़े जाने वाले व्यक्ति का बोलते हुए बाहर आना एक अलग बात है। वह कब्र में दफना दिया गया था परंतु बोलता हुआ बाहर निकला।

तुम उसकी सुनो। यीशु यही कह रहे हैं। उन्होने जब मछली में से एक व्यक्ति को आते देखा तो मन फिराया। यदि तुम भी मरे हुओं में जीवित हुए पर विश्वास नही कर सकते तो तुम पर अधिक न्याय आएगा। जब बाहर आया तो वह क्या कह रहा था? योना ने क्या संदेश दिया? ''मन फिराओ, परमेश्वर का न्याय आ रहा है। बस चालीस दिन और फिर शहर को नाश कर दिया जाएगा।'' और यीशु आए। मती शुरू से ही इसे स्पष्ट कह रहा है, मती 4:17, यीशु कह रहे हैं, ''मन फिराओ क्योंकि परमेश्वर का राज्य निकट है।'' यदि आपने अभी तक अपने पापों से मन नही फिराया या परमेश्वर की ओर नही फिरे हैं तो आज का यह वचन आपके मन फिराने के लिए है। हर व्यक्ति अपने पाप से फिरकर मसीह की ओर मुड़े। आप पूछ सकते हैं कि यीशु किस अधिकार से मुझे अपना जीवन उस पर केंद्रित करने के लिए कह सकते हैं? वो आप के पापों के लिए क्रूस पर मरे और तीसरे दिन पाप और कब्र की मृत्यु पर जय पाकर जी उठे। और इसी अधिकार से वो आपको मप फिराने के लिए बुलाते हैं।

और परिणाम, नीनवे का राजा, वहाँ के लोग, जानवर सभी छुटकारे के लिए पुकार उठे। और उत्तर, एक दयापूर्ण उत्तर, यीशु मसीह के कार्य से सफल हुआ राष्ट्रों का उद्धार। कुछ लोगों अथवा किसी एक राष्ट्र का नही परंतु सभी राष्ट्रों का उद्धार। और इसीलिनए यीशु आकर मरे, जीवित हुए, मन फिराव का प्रचार किया और राष्ट्रों को परमेश्वर की ओर मुड़ने का आह्वान किया। और यह हमारे सामने चुनौती रखता है।

तो, हम पुराने नियम के एक भविष्यद्वक्ता की एक कहानी से हमारे नए नियम के भविष्यद्वक्ता, उद्धारकर्ता एवं राजा प्रभु यीशु मसीह की तरफ आए हैं। हमारे लिए इसका क्या अर्थ है? हममें से हर एक के लिए जो कभी पापी था और यीशु के द्वारा छुड़ाया, उसने अपनी दया को प्रकट किया। आपकी पाप करने की क्षमता को उसने हरा दिया और पापों को माफ किया। उसने हमें स्वयं की ओर खींचा। इसका हमारे लिए क्या अर्थ है? आओ हम उसकी महान आज्ञा के लिए स्वयं को समर्पित कर दें, चाहे इसका कोई भी अर्थ क्यों न हो।

हम योना के परमेश्वर की इच्छा से भाग जाने के बारे में बात करते हैं। और हमारी भी यही इच्छा होती है, यह सामान्य रूप से हमारी या परमेश्वर की इच्छा की बात नही है। योना के लिए परमेश्वर की इच्छा क्या

थी? दो आज्ञाएँ। जा और प्रचार कर। जा और प्रचार कर। तो, आप कहेंगे कि वे आज्ञाएँ तो योना के लिए थीं। हमारे लिए परमेश्वर की आज्ञा क्या है? हमारे लिए परमेश्वर की आज्ञा, मती 28:19, इसी पुस्तक में लिखी है। दो आज्ञाएँ। जाओ और प्रचार करो। सभी राष्ट्र के लोगों को चेला बनाओ। यह योना के लिए परमेश्वर की योजना एवं हमारे लिए उसकी योजना की स्पष्ट तुलना है। यह परमेश्वर की इच्छा है कि हममें से हर व्यक्ति सभी राष्ट्रों को सुसमाचार सुनाए। इस आज्ञा के लिए एक कलीसिया के रूप में मिलकर कार्य करे। और जबकि यह आज्ञा हमें, तुम्हे, सबको दी गई है, हम केवल बैठे हैं और कहते हैं कि नही, हम दूसरे देशों में नही जाएँगे।

इसी बात को योना में देखते हैं और मसीह को जानने वाले हम लोगों पर यह अधिक लागु होगा। आओ हम अपना जीवन महान आज्ञा के लिए समर्पित करें चाहे इसका कोई भी अर्थ क्यों न हो। हमारी सुरक्षा, संतुष्टि से बढ़कर हम सुसमाचार को फैलाने के लिए तत्पर रहें। हाँ, हमारे पास आजादी, महिमामयी आजादी है जो हमें परमेश्वर के अनुग्रह से मिली है और हमारे पास वरदान हैं। परंतु इसका मतलब यह नही है कि हमें पूरी जिंदगी यहाँ बितानी है। हमारी प्रमुख पहचान अमेरिकी नही है।

अब मैं दूसरा प्रश्न पूछकर जूलाई 4 को खराब करना चाहता हूँ, ''क्या आपने अपनी जीवन में कभी भी परमेश्वर से पूछा है कि मैं कहाँ रहूँ औश्र क्या उसके उत्तर का इंतजार किया है?'' क्या आपने परमेश्वर से कहा है, ''मैं, मेरा परिवार किसी भी देश में जाकर रहेंगे, हमें वो जगह दिखा। यदि वह इराक है, हम वहाँ रहेंगे, यदि वह दक्षिणी अफ्रीका है, हम वहाँ रहेंगे, यदि वह नेपाल है, हम वहाँ रहेंगे। मेरी सोच, मेरा मार्ग आपको समर्पित है।'' और मुझे पता है कि अचानक से हम सोचेंगे, ''परंतु, पासवान, हमें दूसरे देश नही जाना चाहिए।'' मैं यह नही कह रहा कि हम सबको यह देश छोड़कर दूसरे देशों में जाना है। और बाइबल यह नही कह रही कि हम सबको यहाँ से छोड़कर दूसरे देशों में जाना है। परंतु परमेश्वर की इच्छा है कि हम हमारी राष्ट्रीय पहचान ढ़ीला पकड़कर रखें। हम दूसरे देश के, स्वर्गीय देश के नागरिक हैं। हमारी नागरिक वहाँ की है, अमरीका की नही। परिणामस्वरूप, हमारा जीवन उसके हाथों में है कि वह जहाँ चाहे हमें रखे, जहाँ चाहे, भेजे। और मसीह के हर अनुयाई के लिए लिए यह जरूरी है कि वह अपने हाथों को परमेश्वर के सामने फैलाकर कहे, ''जहाँ तू चाहे, हम जाएँगे।'' हम योना भविष्यद्वक्ता की तरह नही करना चाहते। निसंदेह, परमेश्वर आपमें से कुछों को कहेगा, ''मैं चाहता हूँ कि तुम, अमरीका में, या बर्मिंगम में, संयुक्त राष्ट्र में ही कहीं पर मेरी महिमा एवं सभी राष्ट्रों के लिए रहो।'' और वह दूसरों से कहेगा, ''तुम इस देश में या उस देश में रहो।''

मैने कई परिवारों को देखा है जो पिछले साल बाहर गए हैं। कई ऐसे परिवार हैं जो यहीं रहते और फायदेमंद जीवन जी रहे हैं। कुछ कहते हैं कि मैं परमेश्वर की महिमा को संसार में फैलाने के लिए अपने संसाधनों का कैसे उपयोग करूँ। हमारे जीवन में यह कुछ अलग सा लगता है। हमें यह कहना चाहिए कि मैं अपनी सुरक्षा, संतुष्टि से अधिक यह चाहता हूँ कि सुसमाचार सभी राष्ट्रों तक पहुँच सके।'' आइए परमेश्वर से प्रार्थना करें कि वह हमारे दिमाग को वचन के इस सच से और दिल को संसार के प्रति प्रेम से भरे। हर समय वचन को पढ़कर, हम यदि बार बार उसके सामने गिरकर यह नही कहते हैं कि हमें दिखा कि संसार में क्या हो रहा है तो हम खुद को मूर्ख बना रहे हैं। मदद कर कि मैं भी संसार के प्रति आपकी चाह को प्राप्त कर सकूँ। प्रभु, ब्रूक हिल्स की कलीसिया के बारे में कहा जाए कि हम परमेष्वर ही की तरह पूरे राष्ट्रों में उसकी महिमा फैले। हे परमेष्वर हमारा दिल भी वैसा ही हो। आइए हम संसार में मौजूद एवं आने वाली आत्माओं के लिए अपने आराम, सहूलियत एवं चाहत को त्याग दें। हम ऐसी बातों में न लग्न हो जाए जिनका कोई अर्थ नही हो। हम लोग किसी प्रकार के व्यवसायियों, पदों, खेलों अथवा मनोरंजनों या संसार की किसी भी चीजों के नाम से न प्रसिद्ध हों। हम इन छोटी छोटी बातों के लिए न जाने जाएँ। हम इस सच की छोटी से छोटी बातों को ध्यान में रखने वाले हों, हमारे चारों ओर इस शहर एवं संसार भर में कई सारे लोग रहते हैं जिनकी अनंतता खतरे में पड़ी है। और हमें परमेष्वर का सुसमाचार सुनाने के लिए परमेष्वर की करूणा मिली है।

अतः आओ हम हमें मिले परमेष्वर के अनुग्रह का उपयोग करें कि परमेष्वर को महिमा मिल सके। क्या हमें ज्ञात है कि परमेष्वर की प्रसन्नता को पाने की कोई भी योग्यता हममें नही है। हममें कोई गुण नही है जो परमेष्वर की करूणा को पा सकने के योग्य हो। मैं खुद के बारे में सोचता हूँ। मैं एक ऐसी जगह पर पैदा हुआ जहाँ सुसमाचार आसानी से पहुँचारया जा सकता था। मेरे बचपन से ही मैने यीषु मसीह के क्रूस पर की मृत्यु के बारे में सुन रखा था। और इतना ही नही, मेरा जन्म ऐसे माहौल में हुआ जहाँ हमें मिल रहे साफ पानी, भोजन एवं स्वास्थ्यवर्धक वस्तुओं के बारे में चिंता करने की जरूरत ही न होती थी। और मैं इस सच्चाई से नम्र हूँ कि जहाँ मेरा जन्म हुआ, उससे मेरा कोई लेना देना नही था। यह सब कुछ मात्र परमेष्वर के अनुग्रह के चिन्ह हैं। और इन्हे पाने के लिए मैने कोई कार्य नही किया। मैं यह सुनकर और भीर नम्र होता हूँ कि संसार के करीब दो सौ करोड़ लोग ऐसी जगहों पर जन्मे हैं जहाँ सुसमाचार नही है। वे ऐसे परिवारों में जन्मे हैं जिनकी कई पिछली पीढ़ियों अथवा पूर्वजों ने यीषु के क्रूस पर मरने तक के बारे में नही सुना। और कुछ ऐसी जगहों पर जन्मे हैं जहाँ का पानी साफ नही है, भोजन की कोई गारंटी नही है। परंतु सच्चाई यह है कि उन्हे भी अपने जन्म के स्थान की परिस्थितियों से कोई लेना देना नही है। मैं दिखावा नही कर रहा कि मुझे परमेष्वर के मन की सारी बातों के बारे में पता है या उसके सारे रहस्यों को

खोल सकता हूँ। परंतु मैं परमेष्वर के अधिकार में यह कहूँगा कि हमस ब उसकी करूणा को पाने वाले बनें जो कि उसके वचन में भी लिखा है। आपके पास सुसमाचार है। हमारे पास अत्यधिक संसाधन हैं। हममें से सबसे गरीब भी संसार की तुलना में धनी है।

आपको करूणा मिली है। हमें मिली हुई करूणा को संसार के उसके मिषन से अलग न करें। उसने हमें एक कारण, एक उद्देष्य के साथ करूणा दी है। और यह आराम से बैठकर, सुविधाओं का आनंद लेना एवं नही आने वालों पर दोष लगाना नही है। यह संपूर्ण पृथ्वी पर उसकी महिमा फैलाने के लिए अपना जीवन दे देना है। उसके लिए हमें कोई भी आराम क्यों न छोड़ना पड़े, या सुरक्षा या संतुष्टि को त्यागना पड़े। इस धरती पर हमारा उद्देष्य यही है।

परमेष्वर आपमें इस शहर के प्रति एवं इसमें से होकर गुजरने वाले हर व्यक्ति के प्रति बोझ डाले। वह हमे अपने अनुग्रह, आषा, जीवन एवं पष्चाताप के संदेष को ले जाने वाले वक्तागण बनाए। परमेष्वर की ओर मुड़े। हे परमेष्वर, इस शहर में ये शब्द हमारे होंठों पर बने रहें और हमें इस राष्ट्र की महान जरूरत के लिए इस्तेमाल करे। मदद करे कि हम वही देखें जो आप देखते हैं। और वही महसूस करें जो आप महसूस करते हैं। और जो आप कहते हैं, उसे मानें। मदद कर कि हम पृथ्वी के अंत तक जाकर सुसमाचार प्रचार कर सकें।